

## Rani Abbakka Devi

Due to the entry of the Portuguese in the 16th century, Tulunadu became a hotbed of unrest. When more than fourteen sub dynasties like the Bangas, Ajilas, Chautas, Sawantas, were engaged in conflict amongst themselves. It then inevitable that they had to fight against the Europeans as well. The political centres of the Banga dynasty were Belthangady, Uppinangady, Nanadvara and Mangalore, and the Chautas were Ullala, Puttige and Mudabidre region. These dynasties belonged to the Jain community. The Chautas of Ullal rose to power during the 12th century.

The names of elder Rani Abbakka Devi (1554-1588) and younger Rani Abbakka Devi (1594-1640) shine like the brightest stars in Indian history. The elder Rani Abbakka Devi was married to Kamaraya II, and her daughter, the younger Rani Abbakka Devi was married to Lakshmappa Bangarasa, the IV. Both Kamaraya and Lakshmappa belonged to the Banga dynasty. The mother-daughter duo held great expertise in warfare and other state crafts and were popular amongst their subjects. When the Banga dynasty succumbed to the Portuguese rule and was prepared to pay tribute, the elder Rani Abbakka Devi opposed it. Elder Rani Abbakka Devi resisted the Portuguese until her last breath, while the younger Rani Abbakka Devi continued her mother's revenge and fulfilled her mother's dreams.

The difference of opinion between the Lakshamappa Bangarasa and Younger Abbakka on payment of tribute to the Portuguese increased to such an extent that she left the Palace of her husband in Mangalore with her three children and assumed the throne at Ullal, inherited from her mother. She was ready to face Portuguese in war than to offer them tribute.

The war continued for a long time. In 1617, when the Portuguese looted a merchant ship of Abbakka, enroute to Saudi Arabia, she was gravely enraged. This incident led to the great war against the Portuguese in 1618. Abbakka got the help of Venkatappa Nayaka of Keladi, who also saw the Portuguese and the Bangas as his enemy. The Portuguese Navy, which had an excellent reputation internationally, was destroyed by Rani Abbakka with her meagre military force in her war against the Portuguese in 1618. In this war, Portuguese military leaders Miranda and D'Mello narrowly escaped.

This news spread like wildfire in Europe. More or less, after this incident, the coastal belt was freed from Portuguese

interference.

As suggested by Shah Abbas, the king of Persia, Italian traveller Pietro Dalla Valle came to Ullal in 1623 to meet Rani Abbakka. He gets inspired by his meeting with the queen in Manel. His description of this exceptional meet can be found in his travelogue. Had Rani Abbakka not defeated the Portuguese with her skilled war tactics, the possibility of the Portuguese ruling India instead of the Britishers had a high chance.

Rani Abbakka was as well known for her war tactics and state crafts as her love towards her subjects, governance and justice. Such an extraordinarily brave woman who belongs to the Tuluva soil is a matter of great pride to the entire nation. Despite being the queen of a small province like Ullala, she dared to erupt against the European forces and defeat the Portuguese. Hence, it is only apt to say that Braveheart is the first Indian freedom fighter to fight against the European powers.

The Portuguese had made several attempts to capture Ullal, strategically placed. But Abbakka had repulsed each of their attack with sheer courage and ingenuity. The queen's story is retold from generation to generation through folk songs and yakshagana, the popular folk theatre. In bootaradhana, (which literally means appeasing the possessed, a local ritual dance) the personal in trance narrates the great deeds of Abbakka Devi. Abbakka, dark and good looking, always dressed in simple clothes like a common village woman. She rode the horse stately and worked deep into the night dispensing justice.

Rani Abbakka, though a Queen of a little known small princely state, Ullal, was magnetic woman of indomitable courage and patriotism. While Rani Jhansi has become a symbol of courage, Abbakka, nearly 300 years her predecessor, has been largely forgotten by history. Available records and archives speaks of her as a luminous personality of awesome valour and bravery.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on Rani Abbakka Devi and salutes her valour and bravery, an everlasting inspiration for every Indian.

### Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ : Smt. Vinita Sinha

Cancellation Cachet

Text : Based on information received from proponent



डाक विभाग  
DEPARTMENT OF POSTS

## रानी अब्बक्का देवी RANI ABBAKKA DEVI



विवरणिका BROCHURE

## रानी अब्बक्का देवी

भारत में 16वीं सदी में पुर्तगालियों के आने के कारण तुलुनाडु अशांति का एक बड़ा क्षेत्र बन गया। उस समय वहां के चौदह से अधिक उपराजवंशों जैसे बंग, अजिलस, चौटा, सावंत आदि में आपसी संघर्ष चल रहा था, तो यह अपरिहार्य था कि उन्हें यूरोपीय शक्तियों के खिलाफ भी युद्ध करना पड़ा। बंग राजवंश के राजनीतिक केंद्र बेलतांगडी, उप्पिनगडी, नंदावरा और मंगलौर थे और चौटा राजवंश के केंद्र उल्लाल, पुथिगे और मूडबिदरी थे। उल्लाल क्षेत्र के चौटा 12वीं सदी के दौरान सत्ता में आए।

बड़ी रानी अब्बक्का देवी (1554–1588) और उनकी बेटी, छोटी रानी अब्बक्का देवी (1594–1640) के नाम भारतीय इतिहास के चमकते सितारों की तरह हैं। बड़ी रानी अब्बक्का देवी का विवाह कामराय द्वितीय के साथ हुआ और उनकी बेटी युवा रानी अब्बक्का देवी का विवाह लक्ष्मप्पा बंगरासा चतुर्थ के साथ हुआ। कामराय और लक्ष्मप्पा दोनों ही बंग राजवंश से ताल्लुक रखते थे। मां-बेटी की यह जोड़ी शासनकला एवं कूटनीति के साथ-साथ युद्ध कला में भी अत्यंत निपुण थीं और अपनी प्रजा के बीच लोकप्रिय थीं। जब बंग राजवंश ने पुर्तगालियों के सामने घुटने टेक दिए और उनकी अधीनता स्वीकार करने के फलस्वरूप रियासत के राजस्व का एक हिस्सा कर के रूप में अदा करने के लिए तैयार हो गए, तब बड़ी रानी अब्बक्का देवी ने इसका विरोध किया। बड़ी रानी अब्बक्का देवी अपनी अंतिम सांस तक पुर्तगालियों का प्रतिरोध करती रहीं और युवा रानी अब्बक्का देवी ने इस जंग को जारी रखा और अपनी मां के स्वप्न को पूरा किया।

लक्ष्मप्पा बंगरासा और युवा अब्बक्का के बीच पुर्तगालियों को कर अदा करने के विषय पर मतभेद इस हद तक बढ़ गया कि युवा अब्बक्का ने अपने तीनों बच्चों के साथ मंगलौर स्थित अपने पति का महल छोड़ दिया और अपनी मां से विरासत में मिली उल्लाल की राजगद्दी संभाली। रानी अब्बक्का ने कर अदा करने की बजाए पुर्तगालियों का युद्ध में सामना करने का फैसला लिया।

यह युद्ध लंबे समय तक चला। वर्ष 1617 में, जब पुर्तगालियों ने अब्बक्का के एक व्यापारिक जहाज को सऊदी अरब जाते समय लूट लिया, तो वह बहुत ज्यादा क्रुद्ध हो गईं। इस घटना के परिणामस्वरूप वर्ष 1618 में पुर्तगालियों के खिलाफ एक बड़ा युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में रानी अब्बक्का को कैलाड़ा के वेंकटप्पा नायक की मदद मिली, जो पुर्तगालियों और बंग को अपना दुरमन मानते थे। 1618 में हुए इस युद्ध में रानी अब्बक्का ने अपने छोटे से सैन्य बल के दम पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त पुर्तगाली नौसेना को बुरी तरह परास्त कर दिया। इस युद्ध में पुर्तगाली नौसेना के दो प्रमुख अधिकारी मिरांडा और डीमेलो जान बचाकर भाग निकले।

यह खबर यूरोप में जंगल की आग की तरह फैल गई। इस युद्ध के बाद तटीय क्षेत्र पुर्तगालियों के कब्जे से कमाबेश मुक्त हो गया।

फारस के राजा शाह अब्बास के सुझाव पर इटली के यात्री पिएट्रो डल्ला

वेल वर्ष 1623 में रानी अब्बक्का से मिलने उल्लाल आए। वह रानी अब्बक्का से मानेले में हुई अपनी मुलाकात से बहुत प्रभावित एवं प्रेरित हुए। इस खास एवं विशिष्ट मुलाकात का वर्णन उनके यात्रा वृत्तांत में उपलब्ध है। यदि रानी अब्बक्का ने अपनी कुशल युद्धनीति से पुर्तगालियों को पराजित नहीं किया होता, तो भारत पर अंग्रेजों की बजाए पुर्तगालियों का शासन होने की बड़ी संभावना होती।

रानी अब्बक्का अपने युद्ध कौशल और शासन-कला के लिए जितनी सुप्रसिद्ध थीं, उतनी ही वे अपनी प्रजा के प्रति प्रेम, सुशासन और न्याय के लिए भी जानी जाती थीं। तुलुवा की भूमि से ताल्लुक रखने वाली वह ऐसी असाधारण वीर महिला थी, जिन पर संपूर्ण देश को गर्व है। उल्लाल जैसी एक छोटी सी रियासत की रानी होने के बावजूद, उन्होंने यूरोपियन शक्तियों के खिलाफ युद्ध करने का साहस कर पुर्तगालियों को पराजित किया। इसलिए यह कहना बिल्कुल सही होगा कि वीरांगना रानी अब्बक्का, यूरोपियन शक्तियों के खिलाफ युद्ध करने वाली पहली भारतीय स्वतंत्रता सेनानी हैं।

पुर्तगालियों ने राणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण उल्लाल पर कब्जा करने के अनेक प्रयास किए, लेकिन रानी अब्बक्का ने उनके हर हमले का पूरे साहस और चतुराई से सामना करते हुए उसे विफल कर दिया। रानी अब्बक्का की कहानी लोकगीतों और लोकप्रिय लोक नाट्यरूप, यक्षगान तथा भूत अराधना (एक प्रकार का अनुष्ठानिक लोक नृत्य, जिसमें अवचेतनावस्था में अब्बक्का देवी की गाथाओं का वर्णन किया जाता है) के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। सांवली और आकर्षक व्यक्तित्व की धनी रानी अब्बक्का सदैव ही एक आम ग्रामीण महिला की तरह साधारण पोशाक में रहती थीं। घोड़े पर शान से सवार रानी अब्बक्का अपनी रियासत में देर रात तक न्याय करने के काम में लगी रहती।

यद्यपि रानी अब्बक्का एक छोटी सी रियासत उल्लाल की रानी थी, लेकिन वह अपने अदम्य साहस और देशभक्ति के लिए जानी जाती हैं। जहां एक ओर झांसी की रानी वीरता एवं साहस की प्रतीक के रूप में जानी जाती हैं, वहीं उनसे लगभग 300 वर्ष पूर्व अपनी बहादुरी का परचम लहरा चुकी पूर्ववर्ती अब्बक्का को इतिहास ने काफी हद तक भुला दिया है। उपलब्ध रिकार्ड और प्राचीन दस्तावेज रानी अब्बक्का को शौर्य एवं वीरता की धनी व्यक्तित्व के रूप में बयां करते हैं।

डाक विभाग, प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणा की स्रोत रानी अब्बक्का देवी की बहादुरी और शूरवीरता को सलाम करते हुए उन पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

### आभार :-

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्रीमती विनिता सिन्हा

विवरणिका/विरूपण कैंशे

पाठ

: प्रस्तावक से प्राप्त सूचना के आधार पर।

## तकनीकी आंकड़े

### TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक टिकटें	: 303200
Stamps Printed	: 303200
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover, Miniature Sheet and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00